International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 08-04-2025, Accepted: 09-05-2025, Published: 24-05-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 86-87

पंडित नेहरु के समाजवादी चिंतन के विकास का प्राच्य और पाश्चात्य प्रभाव

डा. अखिलेश त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
पण्डित नेहरू के ऊपर महात्मा गांधी के 'साध्य और साधन की पवित्रता' के सिद्धान्त का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा, इस तथ्य को पण्डित नेहरू स्वयं स्वीकार करते हैं। इस पुस्तक ने पण्डित नेहरू की आभ्यान्तरिक सम्वेदना को इतना झंकृत कर दिया कि अब पण्डित नेहर की एशिया और यूरोप की राजनीतिक परिघटना में गहरी अभिरुचि जागृत हो गयी। फलतः एशिया और यूरोप की राजनीतिक घटनाएं नेहरू जी को गहरे रूप में अनुप्राणित करने लगीं। पण्डित नेहरू ने इसी समय के फेबियन तथा अन्य समाजवादी सिद्धान्तों से सम्बन्धित ग्रन्थों का गहन अनुशीलन किया। फलतः समाजवाद के प्रति पण्डित नेहरू के मन में चंचल आकर्षण और जिज्ञासा क्रमशः बढ़ती गयी। राजनीतिक सिद्धान्तों के गहन अनुशीलन–मनन ने पण्डित नेहरू को तत्कालीन राजनीतिक आन्दोलन अब वैचारिक रूप से स्पन्दित करने लगे, इन आन्दोलनों के प्रति उनकी रूचि दिनों दिन बढ़ती गयी। नेहरू जी के चिन्तन के उद्भव में ब्रिटिश उदारवाद का अधिक योगदान रहा है। उदार समाजवादी, विकासवादी सिद्धान्त को मानते हैं। उदार समाजवादी वैधानिक साधनों के माध्यम से शासन व्यवस्था में परिवर्तन का पक्षपोषण करते थे। वे वैधानिक साधनों के माध्यम से समाजवादी समाज को प्रतिस्थापना करना चाहते थे।

मूलशब्द: समाजवाद, पंडित नेहरू, उदारवाद, महात्मा गांधी का प्रभाव, राजनीतिक चिन्तन

पण्डित नेहरू का शैशव एक ऐसे परिवार में प्रारम्भ हुआ जब भारत में स्वतंत्रता का मुक्ति संग्राम अपनी निरन्तरता में था। पण्डित नेहरू का परिवार राष्ट्रीय राजनीतिक गतिविधियों का अभिकेन्द्र था। स्वाभाविक रूप से नेहरू जी के चिन्तन पर प्रथमतः प्रभाव उनके पारिवारिक परिवेश का पड़ा जो जीवन पर्यन्त छाया के सदृश साथ बना रहा। पण्डित नेहरू की विचार शैली पर उसके लक्षण स्पष्टतः दृष्टिगोचर होते हैं।[1] नेहरू जी पर तीन व्यक्तियों का प्रभाव स्पष्टतया पड़ा जिसे वह स्वयं स्वीकार करते हैं। प्रथमतः अपने पिता से, द्वितीय महात्मागांधी से, जिनसे अपने व्यक्तित्व को विकसित करने की अनुप्रेरणा प्राप्त की थी तथा तृतीय पण्डित नेहरू ने कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ टैगोर से वैश्विक दृष्टि प्राप्त की थी।[2] इसके अतिरिक्त पण्डित नेहरू के चिन्तन के उद्भव एवं विकास में पाश्चात्य विचारकों एवं दर्शन का भी विशिष्ट योगदान रहा, जिसकी परिचर्चा उन्होंने अपनी आत्म कथा में की है। 1905 में नेहरू जी विद्याध्ययन के लिए इंगलैण्ड के प्रवास पर गये। प्रस्थान के एक वर्ष बाद 1906 में ब्रिटेन में आम चुनाव आयोजित थे। इस आम चुनाव में उदारवादियों को सफलता प्राप्त हुई थी। इस परिघटना ने नेहरू जी के मन मस्तिष्क को गहरे रूप से अनुप्राणित किया।[3] ब्रिटिश उदारवाद की अमिट छाप उनके अन्तरमन में सदैव विद्यमान रही। इसी उदारवाद से अनुप्रेरित होकर पंडित नेहरू भारतीय संदर्भ में समाजवाद शब्द का अनुप्रयोग करते थे। वह समाज वाद नहीं था प्रत्युत सीधे अर्थो में ब्रिटिश उदारवाद था। शिक्षा के निमित्त ब्रिटिश प्रवास के समय मेरीडिथ टाउन सेण्ड की प्रसिद्ध कृति 'एशिया और यूरोप' के स्वाध्याय से पण्डित नेहरू का मानसिक आकर्षण राजनीति की ओर हुआ। इसे पण्डित नेहरू स्वयम् स्वीकार करते हैं।[4] इस पुस्तक ने पण्डित नेहरू की आभ्यान्तरिक सम्वेदना को इतना झंकृत कर दिया कि अब पण्डित नेहर की एशिया और यूरोप की राजनीतिक परिघटना में गहरी अभिरुचि जागृत हो गयी। फलतः एशिया और यूरोप की राजनीतिक घटनाएं नेहरू जी को गहरे रूप में अनुप्राणित करने लगीं। पण्डित नेहरू ने इसी समय के फेबियन तथा अन्य समाजवादी सिद्धान्तों से सम्बन्धित ग्रन्थों का गहन अनुशीलन किया। फलतः समाजवाद के प्रति पण्डित नेहरू के मन में चंचल आकर्षण और जिज्ञासा क्रमशः बढ़ती गयी। राजनीतिक सिद्धान्तों के गहन अनुशीलन–मनन ने पण्डित नेहरू को तत्कालीन राजनीतिक आन्दोलन अब वैचारिक रूप से स्पन्दित करने लगे, इन आन्दोलनों के प्रति उनकी रूचि दिनों दिन बढ़ती गयी। नेहरू जी के चिन्तन के उद्भव में ब्रिटिश उदारवाद का अधिक योगदान रहा है। उदार समाजवादी, विकासवादी सिद्धान्त को मानते हैं। उदार समाजवादी वैधानिक साधनों के माध्यम से शासन व्यवस्था में परिवर्तन का पक्षपोषण करते थे। वे वैधानिक साधनों के माध्यम से समाजवादी समाज को प्रतिस्थापना करना चाहते थे।[5] फलस्वरूप पं0 नेहरू सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक तथा धार्मिक समस्याओं का समाधान वैधानिक साधनों के माध्यम से करना चाहते थे।

पण्डित नेहरू के ऊपर महात्मा गान्धी का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। परन्तु महात्मा गांधी के सिद्धान्तों में उनकी आस्था सीमित रही है। भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास के सम्बन्ध में उनमें और गांधी जी में व्यापक अन्तर है। कभी–कभी प्रतीत होता है कि गांधी और नेहरू दोनों एक दूसरे के विपरीत छोर हैं। पण्डित नेहरू के ऊपर महात्मा गांधी के 'साध्य और साधन की पवित्रता' के सिद्धान्त का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा, इस तथ्य को पण्डित नेहरू स्वयं स्वीकार करते हैं।[6]

जिस कारण से नेहरू जी चौथे दशक के प्रारम्भिक वर्षो में साम्यवाद की ओर आकृष्ट हुए, वह उनके सिद्धान्तों का ध्रुव वैपरित्य था।[7] उन्होंने देखा कि संसार साम्यवाद और फासीवाद के मध्य भीषण संघर्ष में संलग्न होने जा रहा है, इसी परिवेश में

उन्होंने साम्यवाद की ज्यादतियों की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि मेरा ध्रुव विश्वास है कि आज विश्व को मूलतः साम्यवाद एवं फांसीवाद के दो रूपों में से किसी एक रूप का चुनाव करना होगा, और मैं पूर्णतः साम्यवाद के पक्ष में हूँ। कोई मध्यम मार्ग नहीं है। मैं साम्यवाद को आदर्श के रूप में चुनता हूँ।[8] पंडित नेहरू पर समाजवादी अथवा लोकतंत्रावादी होने के पूर्व कुछ विचारक कुलीनतंत्रा होने का भी आरोप लगाते हैं। इस आरोप में कुछ सत्यांश अवश्य है, जिसे पण्डित नेहरू स्वयं स्वीकार करते हैं। ''मैं प्रतिरूप या आदर्श रूप से बुर्जुआ विचार का हूँ, बुर्जुआ परिवेश में पाला पोशा गया और उन्हीं विचारों से घिरा हूँ।''[9]

नेहरू जी की रचनाओं में समाजवाद की चर्चा बहुतायत मात्रा में मिलती है। स्वयं पंडित नेहरू ने इस सम्बन्ध में कहा था, मैं विशुद्ध राष्ट्रवादी था जब कि मेरे अध्ययन के दिनों में मेरे समाजवादी आदर्श पृष्ठ भूमि में चले गये थे।[10] सन् 1927 में यूरोप में आयोजित होने वाले 'दलित सम्मेलन' के समय पं0 नेहरू यूरोप में ही थे। इसे ब्रूसेल्स सम्मेलन के नाम से भी जाना जाता है। उसमें भाग लेने के लिए आये हुए प्रतिनिधियों से नेहरू जी का सम्बन्ध स्थापित हुआ। इस सम्मेलन की विचार धारा का प्रभाव पण्डित नेहरू पर व्यापक रूप से पड़ा। ब्रूसेल्स कांग्रेस के वाद नेहरू जी का सम्बन्ध अन्य समाजवादियों से भी हुआ। 1927 के अन्त में नेहरू जी साम्यवादी क्रान्ति (बोल्शेविक क्रान्ति) की दसवीं वर्ष गाँठ में भी भाग लिया। तत्कालीन सोवियत संघ की यात्रा से पंडित नेहरू गहरे रूप से प्रभावित हुए। नेहरू जी रूस की आर्थिक, शैक्षिक प्रगति से विशेष रूप से प्रभावित हुए तथा इसी आधार पर सोवियत रसिया नामक पुस्तक का प्रणयन किया। इस पुस्तक में उन्होंने लिखा कि रूस के अनुभवों से भारतीयों को बहुत ही अधिक सहायता मिल सकती है। रूस की स्थिति से भारत की स्थिति अधिक भिन्न नहीं है।[11] इस रूसी यात्रा का यह परिणाम निकला कि उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया कि रूस ही विश्व में साम्राज्य विरोधी राज्य है तथा रूस और भारत संयुक्त रूप से मिलकर ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी नीति का अनुकरण कर सकते हैं।[12]

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मेरी कहानी: जवाहर लाल नेहरू अनुवाद: हरिभाऊ उपाध्याय पृष्ठ संख्या 21 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, 1964।
2. लोकदेव नेहरू: राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर पृष्ठ संख्या 67 उदयाचल प्रकाशन, राजेन्द्र नगर पटना, प्रथम संस्करण, 1965।
3. मेरी कहानी: जवाहर लाल नेहरू पृष्ठ संख्या 38।
4. मेरी कहानी: जवाहर लाल नेहरू पृष्ठ संख्या 44 ।
5. समाजवाद की रूप रेखा: अमर नाथ अग्रवाल, पृष्ठ संख्या 213। विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, तृतीय संस्करण, 1947।
6. मेरी कहानी: जवाहर लाल नेहरू पृष्ठ संख्या 128 ।
7. नेहरू ए पोलीटिकल वायोग्रेफी: माइकल ब्रेचर पृष्ठ 118, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन, 1959 ।
8. रीसेन्ट ऐसेज एण्ड राइटिंग्स: जवाहर लाल नेहरू पृष्ठ संख्या 188 ।
9. एन आटोबायोग्राफी: जवाहर लाल नेहरू दी बाडली हेड कम्पनी लन्दन प्रथम संस्करण, 1936। पृष्ठ संख्या 29 ।
10. एन आटोबायोग्राफी: जवाहर लाल नेहरू पृष्ठ संख्या 35 ।
11. सोवियत रसिया: पण्डित जवाहर लाल नेहरू, किताबिस्तान, इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1928 ए पृष्ठ संख्या 20
12. एन आटोबायोग्राफी: जवाहर लाल नेहरू, पृष्ठ संख्या 56–63